



पाठ-एक

राजा शिवि



भारत में ऐसे अनेक महापुरुष और राजा-महाराजा जन्म हुए थे जो दान देने में विख्यात हैं। महर्षि दधीचि, राजा हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकुवंशीय राजा नृग, राजा शिवि, दानवीर कर्ण आदि अपने अपने कार्यों के अनुसार दाता के रूप में प्रसिद्ध हुए थे। दान देने में वे कभी सन्देह नहीं हुए थे।

राजा शिवि भारत-भूमि के एक सुप्रसिद्ध राजा थे। देवराज इन्द्र की सभा में देवगण भी दान-धर्म के सम्बन्ध में राजा शिवि का नाम लिए जाते थे। धार्मिक विचार, धर्म पालन, दया तथा गरीबों को दान देना शिवि पर अलंकृत गुण थे। जो कोई उनसे

कुछ माँगने आता तो वे उसे खाली हाथ नहीं जाने देते थे। आगन्तुकों को संतोष कराना वे अपना धर्म समझते थे। देवता और मानव सब ने सर्वत्र उनकी खूब प्रशंसा की। देवताओं ने उनके दान-संबंधी बातों की परीक्षा लेनी चाही। वे यह स्पष्ट करना चाहते थे कि राजा शिवि की दान-संबंधी बात कहाँ तक सही थी। इसलिए सच्चाई समझने के लिए देवराज इन्द्र और धर्मराज यम दोनों कबूतर और बाज के रूप में राजा शिवि के राजदरवार में आए। जिस समय राजा शिवि अपने दरवार के सदस्यों तथा मंत्रियों के साथ विराजमान थे उसी समय एक कबूतर उड़कर ‘रक्षा करो, रक्षा करो’ कहते हुए राजा की गोद में आ गिरा। राजा उस कबूतर को उठाकर सम्भाले ही थे कि एक बाज उस कबूतर का पीछा करते हुए उड़कर आया। उसने कहना शुरू किया – “महाराज ! मेरे मुँह से मेरी खाद्य वस्तु मत छीनीए। आप धर्माचार और धर्मदाता हैं। अतः यह कबूतर मुझे दीजिए। मुझे यह कबूतर शीघ्र चाहिए।” कबूतर ने कहा – “महाराज, मैं तो आपके शरण में आया हूँ। मेरा कोई नहीं है सिवाय आपके। आप तो धर्मदाता है; शरण में आए लोगों को रक्षा करनेवाले हैं। मुझको इस बाज के हाथ सौंप कर मेरे प्राण को मत खोने दीजिए।”

राजा शिवि के मन में शरण में आए कबूतर की रक्षा करने का दृढ़ विचार रहा। इसलिए उन्होंने बाज से कबूतर के बदले दूसरा मांस लेने को कहा। तब बाज ने कहा – “महाराज, मैं बासी तथा किसी अन्य के हाथों मारा जीव नहीं खाता।” राजा किंकर्तव्यविभूढ़ हो गए। फिर राजा ने कहा – “तो बाज, तुम मेरे शरीर का मांस खा सकते हो?” तब बाज ने कहा – “नहीं महाराज, यह अधर्म है। परन्तु, यदि आप अपने शरीर से इस कबूतर के बराबर वजन का मांस काटकर दे दें तो खाना संभव है।”

राजा शिवि ने उस कबूतर को बचाने के लिए अपने शरीर से मांस काटकर बाज को देना अपना धर्म समझा। राजा ने बाज की बात मान ली और अपना शरीर काटना शुरू किया।

सभी सभासद इसे देखकर 'हाय, राम' चिल्लाने लगे। तराजू की एक तरफ कबूतर बैठा, दूसरी तरफ राजा का कटा मांस रखा। इस तरह कई बार मांस काट देने से राजा का शरीर कामजोर हो गया। फिर भी कबूतर भारी ही होता रहा। अंत में राजा स्वयं तराजू पर बैठ गए।

राजा का धर्मानुष्ठान देखकर धर्मराज यम तथा देवराज इन्द्र दोनों स्वयं प्रकट हो गए। स्वर्ग से फूल बरसाय गए। राजा का कटा शरीर देखते-देखते भर गया। उन्हें पुनः जीवन प्रदान कर दोनों देवता दानवीर राजा शिवि की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने स्थान में वापस चले गए।

कठिन शब्दों के अर्थ—

विख्यात	= प्रसिद्ध, मशहूर।
सर्वत्र	= सब जगह, हर वक्त।
विराजमान	= प्रकाशमान, उपस्थित।
किंकर्तव्यविमूढ़ होना	= जो यह न समझ सके कि अब क्या करना चाहिए, भौंचक्का, दुविधा।
वजन	= भार, बोझ, भार का परिमाण।
तराजू	= सामान तौलने हेतु दो पलड़ों का बना एक यंत्र, तुला।
धर्मानुष्ठान	= धार्मिक कृत्य।

प्रश्न-अभ्यास

1. राजा शिवि क्यों प्रसिद्ध हैं ?
2. देवराज इन्द्र और यमराज ने राजा शिवि के दान की परीक्षा कैसे ली ?
3. क्या राजा शिवि दान की परीक्षा में सफल हुए थे ?
4. राजा शिवि ने परीक्षा में क्या-क्या किया ?
5. राजा शिवि पाठ का सारांश लिखिए ।
6. अगर आप राजा शिवि की जगह ले लें तो आप क्या करेंगे ?
क्या आप उनके द्वारा किए गए कार्यों से सहमत हैं ?
7. राजा शिवि पाठ से आप को क्या शिक्षा मिलती है ?
8. राजा शिवि जैसा दाता की कहानी अपने गुरुजनों से पूछकर कक्षा में सुनाइए।

* * * * *